देश और समाज का सबसे भयंकर रोग
अत्याचार एवं रक्तपात

मानसिक तनाव और मनोभावक दौरा को दूर करने का
सबसे लाभदायक और प्रभावी ढंग धार्मिक पेशवाओं,
बुद्धिजीवियों और राजनीतिक नेताओं का
प्रयास और चेष्टा

एक प्रभावी सम्बोधन और काम करने की दावत

[एक एतिहासिक भाषण जो 6 जनवरी, 1993 ई० को
क़ैसरबाग़ बारादरी लखनऊ में मिले-जुले और
बड़े जन-समूह के सामने दिया गया।]

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

•

प्रचारक :

"पयामे इन्सानियत फोरम"

मुख्य कार्यालय, लखनऊ।

www.abulhasanalinadwi.org

सर्वाधिकार सरक्षित :
पयामे इन्सानियत फ़ोरम
पोस्टबाक्स–93
नदवतुल उलेमा, लखनऊ

1993

मुद्रक :
मुद्रण कला भवन
76, मोती लाल बोस रोड
लखनऊ ।

www.abulhasanalinadwi.org

दर्शकगण को ज्ञात है कि 6 दिसम्बर, 1992 को अयोध्या की घटना और बाबरी मस्जिद को गिराये जाने के बाद भारत वर्ष के विभिन्न शहरों और जगहों पर (जिन में मुख्यत: बम्बई, अहमदाबाद, सूरत, भोपाल, अयोध्या और कानपुर हैं) साम्प्रदायिक दंगे हुये, जिन में हिंसात्मक घटनायें लूट मार, आगज़नी इन्सानों को जलाया जाना, बच्चों और औरतों पर अत्याचार और उनकी बेइज्ज़ती, जानमाल के नुक़सान की ऐसी दिल दहलाने वाली और लज्जा जनक घटनाऐं घटित हुईं जिनको सुनकर हर देश प्रेमी का सर शर्म से झुक जाना चाहिये और जिनसे प्राचीन इतिहास और संस्कृति तथा इन्सान दोस्त और विभिन्न धर्मों, नस्लों और सभ्यताओं के गहवारा रखने वाले प्रजातन्त्र देश की पेशानी पर, जिसको बड़े त्याग और एकीकरण और आपसी सहयोग के ज़ोर से विदेशी राज की सत्ता से आज़ाद कराया गया था, कलंक का ऐसा टीका लग गया जिसको दूर करना और इस दाग़ को धोना प्रत्येक भारत वासी का कर्तव्य है। मुख्यता बम्बई, अहमदाबाद और सूरत में ऐसी हिंसात्मक घटनाऐं घटीं जिनके ज़िक्र से ज़बान थरथराती है, क़लम कांपता है और सर शर्म से झुक जाता है। स्वाभाविक तौर पर इन घटनाओं का असर मुसलमानों पर अधिक पड़ा कि वह मुख्यता इन दंगों का निशाना बने।

www.abulhasanalinadwi.org

लखनऊ में भी जो प्राचीन पूर्वी और भारतीय सभ्यता और शिक्षा और साहित्य का एक युग से गहवारा रहा है और जो स्वराज और ख़िलाफ़त तहरीक का बड़ा केन्द्र रहा है और जो सम्पूर्ण भारतीय तहरीक "मानवता का सन्देश" का स्रोत और मुख्य केन्द्र है, इसका गहरा असर था और यहाँ के सोचने समझने वाले और कर्तव्यों का पालन करने वाले और वास्तविकता प्रेमी और दिल में दर्द रखने वाले व्यक्ति इस सिलसिले को रोकने और उसको दूर करने के उपायों पर विचार कर रहे थे। उन्होंने इस की आवश्यकता समझी कि इस सिलसिले में अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिये और विभिन्न राजनीतिक–पार्टियों के नेताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिये "पयामे इन्सानियत" की ओर से एक जन–साधारण सभा बुलाई जाये, जिसमें सर्व साधारण और प्रमुख लोग और राजनीतिक पार्टियों के ज़िम्मेदार बड़ी संख्या में सम्मिलित हों और इन संदेह-जनक परिस्थितियों पर गंभीरता पूर्वक विचार करें, उसके रोकने और उस पर रोक लगाने के लिये ठोस प्रयत्न और चेष्टा करें और इसको एक तहरीक बनायें।

इस प्रस्तावना और आन्दोलन में मेरे आदरणीय बड़े भाई सय्यद सलमान हुसैनी नदवी आगे आगे थे जो अरब देशों में भी

www.abulhasanalinadwi.org

अपने विशेष अरबी भाषा के ज्ञान और प्रतिष्ठा के कारण परिचित हैं और आदर और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। उनकी और उनके साथियों की दावत पर उनकी व्यवस्था में 6 जनवरी, 1993 ई० को क़ैसरबाग बारहदरी में 11 बजे दिन में एक विशाल जन सभा आयोजित की गई, जिसमें लगभग दस हज़ार की संख्या में लोग एकत्र हुये। भीड़ बारादरी के कैम्पस से बाहर सड़क तक थी। विभिन्न राजनीतिक दलों के सदर व जनरल सेक्रेटरी भी स्टेज पर उपस्थित थे और विभिन्न धर्मों और जातियों के भी प्रतिनिधि थे। जलसे को मौलाना सय्यद हमज़ा हसनी नदवी ने कनडक्ट किया और कई राजनीतिक पार्टियों के ज़िम्मेदारों ने संबोधित किया। इस अवसर पर आदरणीय मौलाना सैय्यद अबुलहसन अली हसनी नदवी साहब ने जो तहरीक 'पयामे इन्सानियत' के संस्थापक और आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के सभापति हैं और वह पूरी इस्लामी दुनिया में मान मर्यादा और श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाते हैं, वह सेन्टर फ़ार इस्लामिक स्टडीज़ आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के चेयरमैन भी हैं, एक प्रभावी भाषण दिया जिसमें उन्होंने अपना दिल निकाल कर रख दिया और उस में वह सच्चाइयाँ और सही बातें भी आ गईं जो प्रत्येक विवेकशील मनुष्य और देशभक्त हिन्दुस्तानी के शीघ्र ध्यान देने तथा व्यवहारिक प्रयास व चेष्टा के योग्य हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

इस भाषण के लाभप्रद और प्रभावशाली होने के कारण इसे केसेट से कागज़ पर उतार कर प्रकाशित किया जा रहा है, जिसके लिये मैं मौलवी सय्यद जाफ़र मसऊद हसनी नदवी और प्रिय महमूद हसनी का आभारी हूं। कोशिश की जा रही है कि समाज के हर ख़ास व आम राजनीतिक और धार्मिक दलों और देशभक्त और देश प्रेमियों तक इस भाषण को पहुंचाया जाय। शायद यह भाषण आँखों में नमी, दिल में नर्मी लाये और चिन्ताजनक स्थिति को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये, जो समय की सबसे बड़ी आवश्यकता और देश की सबसे बड़ी सेवा है।

शुभचिन्तक

सय्यद इसहाक़ हुसैनी

सेक्रेटरी 'पयामे इन्सानियत फ़ोरम'

लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से
जो बड़ा दयालु और कृपालु है ।

सज्जनों ! हम इस समय लखनऊ शहर में हैं । मैं अपने भाषण का प्रारम्भ इसी लखनऊ शहर के एक प्रसिद्ध कवि अमीर मीनाई के शेर से करूंगा । साहित्य के बहुत से छात्र, शेर व शायरी से चाव रखने वाले और इतिहास का ज्ञान रखने वाले तथा उसकी चाहत रखने वाले सज्जन उनके नाम से अवगत होंगे, वह कहते हैं—

अमीर जमा हैं अहबाब दर्दे दिल कह ले ।
फिर इलतफ़ाते दिले दोस्तां रहे न रहे ।।

[अमीर नामक कवि कहते हैं कि मित्र लोग एकत्र हैं, अपने दिल के दर्द का हाल उनसे कह ले, भविष्य में पता नहीं उन मित्रों के दिलों की रुचि, उनका ध्यान इस ओर रहे या न रहे ।]

इसी के साथ मैं इसी मुल्क के प्रशंसनीय और बहुत ही प्रसिद्ध शायर, साहित्यकार और फ़लसफ़ी अल्लामा इक़बाल का भी शेर पढ़ूंगा, वह कहते हैं :—

ता तू बेदार शवी नाला कशीदम वर्ना ।
इश्क़ कारेस्त कि बे आहो फ़ुग़ां नीज़ कुनन्द ।।

[इस आशय से मेरे दिल से एक आह कराह निकली है

www.abulhasanalinadwi.org

ताकि आप जाग जायें वर्ना यह इश्क़ तो ऐसा काम है, जो आह कराह और दर्द को ज़ाहिर किये बिना भी किया जाता है और किया जाता रहा है।]

सज्जनों ! मैं बहुत क्षमा याचना के साथ निवेदन करता हूं कि मैं लिखने पढ़ने वाला आदमी हूं लेकिन मेरी रुचि का केन्द्र दो विषय हैं–एक तो सभी धर्म और उनका तुलनात्मक अध्ययन और एक इतिहास, इतिहास के केवल एक भाग का नहीं बल्कि विश्व–सम्बन्धी। मैंने अरबी फ़ारसी उर्दू और अंग्रेज़ी में इस का बड़ा संचय देखा और पढ़ा है। इसी अध्ययन के फलस्वरूप मैं इस सत्यता तक पहुंचा हूं कि विश्व के सभी धर्मों में सबसे अधिक अगर किसी चीज़ पर एका है तो वह यह कि ज़ुल्म व अत्याचार बहुत बुरी चीज़ है और ज़ुल्म इस दुनिया को पैदा करने वाले को पसन्द नहीं है। जहां तक इतिहास का सम्बन्ध है वह बताता है कि ज़ुल्म से कभी–कभी बड़े–बड़े साम्राज्यों के चिराग़ बुझ गये हैं और समाज पर पतझड़ की हवा चल गई है। उन पर पूरी तरह से पतन आ गया है और सारे शैक्षिक और साहित्यिक कारनामे और संचय मिट्टी में मिल गये हैं।

इतिहास में ऐसी गवाहियां, ऐसे प्रमाण मौजूद हैं कि कभी-कभी किसी एक उत्पीड़ित मर्द की आह और किसी एक मुसीबत की मारी स्त्री की कराह से पूरे युग का अन्त हो गया है। जो बात सबसे अधिक देशों की भलाई, सच्ची सहानुभूति सत्यप्रियता, मानवता के कर्तव्य की अदायगी बल्कि उसके एहसास और भावना की है चाहे उस मुल्क ने कितनी उन्नति की हो और उस मुल्क का इतिहास चाहे कैसा रहा हो और उसमें कितने साधन

www.abulhasanalinadwi.org

और संचय हों, यह है कि ज़ुल्म न होने पाये, किसी कमज़ोर आदमी को रौंदा न जाये, किसी घर का चिराग़ बुझाया न जाये, किसी बेज़बान औरत पर हाथ न उठाया जाये और किसी उत्पीड़ित व्यक्ति का श्राप न लिया जाये।

मैं आपसे कहता हूं कि हिन्दुस्तान को छोड़िये लखनऊ शहर के मुक़ाबले में इस बारादरी की क्या हक़ीक़त है, लेकिन अगर कुछ लोग आकर इस बारादरी में तोड़ फोड़ करने लगें कुर्सियां पटकने लगें और लोगों पर आक्रमण कर दें और आप जो यह सजावट का सामान देख रहे हैं उसे बरबाद करना प्रारम्भ कर दें तो इसका रक्षक और इसकी देखभाल करने वाला स्टाफ़ सहन नहीं कर सकता। आप कुम्हार की दुकान पर जाकर देखिये (मै आसानी से यह सुझाव नहीं दूंगा, मुझे आपसे सहानुभूति है) लेकिन मैं आपसे कहता हूं कि आप कुम्हार की दुकान पर अनुभव कीजिये, एक कुम्हार की क्या हक़ीक़त है, उसके मिट्टी के बरतनों की क्या हैसियत है ? दो पैसे की चीज़ है। लेकिन अगर आप कुम्हार की दुकान पर जाकर उसके घड़े तोड़ने लगें, उसके बर्तन फोड़ने लगें तो वह आपको आसानी से जाने नहीं देगा। वह आपको रोकेगा अपने बर्तनों को बचाने का प्रयास करेगा और आप पर आक्रमण करेगा। इसी तरह आप किसी और दुकान पर चले जाइये और उस दुकान को लूटने लगिये, उसका सामान उठा कर ले जाने लगिये, तोड़ फोड़ शुरू कर दीजिये और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने लगिये तो वह सहन नहीं कर सकता, अगर वहां जीवन के चिन्ह हैं और सचमुच वह कोई सभ्य जगह है, पढ़े लिखे

www.abulhasanalinadwi.org

लोग वहां रहते हैं तो पूरा मुहल्ला आकर खड़ा हो जायेगा। घर के लोग बाहर आ जायेंगे पढ़ना लिखना छोड़ देंगे और आप का हाथ पकड़ लेंगे कि इस ग़रीब दुकानदार की क्या ग़लती है कि आप उसकी दुकान और उसके सामान को तोड़-फोड़ रहे हैं और जला रहे हैं ? यहां क़रीब ही एक लाइब्रेरी है (अमीरुद्दौला लाइब्रेरी)। मुझे वहां के एक-एक पृष्ठ का सम्मान है। मेरी बहुत सी लेखनी और चेष्टायें उसकी एहसानमन्द हैं, लेकिन मैं कहता हूं और दिल पर हाथ रखकर कहता हूं कि वहां जाकर कोई किताबें फाड़ने लगे, किताब की क्या वास्तविकता है, इन्सान की लिखी हुई किताब है, दोबारा लिखी जा सकती है, दोबारा छप सकती है और कई बार छप सकती है फिर भी आपको उस संचय या उसके किसी भाग को खराब ओर बरबाद करने की कोई इजाज़त नहीं देगा।

बस फिर क्या आदमी ही रह गये हैं, हमारे भाई बन्द ही रह गये हैं। मानव नस्ल के लोग ही रह गये हैं, जिनसे हमारा मुल्क आबाद है, जिनसे यहां की रौनक़ क़ायम है जिनके कारण हमारा मुल्क, मुल्क कहलाता है, जंगल नहीं ! यहां कोई शिकार खेलने नहीं आता, क्योंकि वह जानता है कि यह लखनऊ है, यह सभ्यता का केन्द्र है, यह अयोध्या है, यह दिल्ली है, यह तारीखी शहर है और मुल्क की राजधानी है, बम्बई है, अहमदाबाद और सूरत है, कहा तक शहरों का नाम लूं, आपको कोई छूट नहीं कि आप मिट्टी के सामान को, शीशे के सामान को और टीन के सामान को भी बरबाद करने लगें, कैसे यह ख़याल

www.abulhasanalinadwi.org

आ सकता कि आदमी, जिसे इस दुनिया के पैदा करने वाले ने किस मुहब्बत से, किस कारीगरी और कृपा से बनाया, वह मनुष्य शिकार बन जाय और किसका शिकार, स्वयं इनसानी हाथों का शिकार ! उसका इस तरह शिकार किया जाय कि जिस तरह शिकारी जानवरों का शिकार करता है ।

सारांश यह कि यह सारे धर्म अगर किसी बात पर एक हैं तो इस पर कि अत्याचार बहुत बुरी चीज़ है और यह ब्रह्मांड के रचयिता को नाराज़ करने वाली चीज़ है और उसकी तरफ़ से अत्याचार करने वालों पर ऐसी ऐसी सज़ायें, आफ़तें और मुसीबतें आती हैं जिन के बारे में पहले से कभी सोचा भी नहीं जा सकता और उनको ध्यान में लाते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । मैं कहना नहीं चाहता, इसी मुल्क का रहने वाला हूं, मेरा जीवन भी इसी मुल्क से बंधा हुआ है मगर कहता हूं कि ज़ुल्म करने वालों पर ख़ुदा की ओर से आफ़तें आती हैं, भूचाल आते हैं, बिजलियां गिरती हैं, मंहगाई बढ़ती है, भुखमरी आती हैं, वस्तुओं का अकाल हो जाता है, बीमारियां भी आम हो जाती हैं, और आगे मुझसे न कहलवाइये ।

मैं कह रहा हूं कि सबसे अधिक डरने वाली जो चीज़ है, वह ज़ुल्म है। दुनिया के सारे धर्म सारे कलचर, सारे रिफामर्स, सारे सूफ़ी सन्त इस बात पर एक हैं कि इन्सान बहुमूल्य वस्तु है और हर धर्म का व्यक्ति, हर शहर का इन्सान, हर मुल्क का इन्सान हर बिरादरी का इन्सान, हर नस्ल का इन्सान, हर गिरोह का इन्सान, हर सोसाइटी का इन्सान, हर योग्यता और सदाचार का

www.abulhasanalinadwi.org

इन्सान, अच्छा हो या बुरा, वह खुदा की ही कारीगरी है, और उसकी कृपा का ही प्रतीक है। हम इसको Master Piece नहीं कहते वर्ना इससे बढ़कर Master peice और क्या हो सकता है ?

अब मैं आपसे यह निवेदन करता हूं कि आदमी बीमार हो जाता है. उस पर आसाबी (पट्ठों से सम्बन्धित) और पागलपन का दौरा पड़ जाता है और यह दौरा व्यक्तिगत भी पड़ता है, सोसाइटी पर भी पड़ता है और पूरी क़ौम (nation) पर भी पड़ सकता है और पड़ता है, और इतिहास हमें यह बताता है कि मर्ज़ का यह दौरा पागलपन का यह दौरा, ज़ुल्म व अत्याचार का यह दौरा मानव जाति से घृणा और उसे पतन की ओर ढकेलने का यह दौरा, केवल व्यक्ति पर ही नहीं बल्कि पूरे-पूरे समाज पूरी-पूरी सोसाइटी, पूरे-पूरे मुल्क और पूरे-पूरे युग पर पड़ा है और यह दौरा पड़ना कोई अनोखी और आश्चर्यजनक बात नहीं है, लेकिन जो चीज़ डरने की है और भयंकर भी है वह यह है कि इस दौरा को दूर करने वाले और इस बीमारी का इलाज करने वाले लोग न हों। हम ने मानवीय सभ्यता और वंश पर ऐसे बड़े बड़े दौरे पड़ते हुये देखे हैं कि मालूम होता था कि अब यह सभ्यता जीवित न रह सकेगी और अब यह वंश आगे न चल सकेगा लेकिन हिम्मत वाले लोग सामने आ गये और उन्होंने वस्तुस्थिति का धारा मोड़ दिया। उसके उदाहरण मैं आपको इतिहास के अध्ययन के प्रकाश में एक नहीं दस दे सकता हूं लेकिन इस अवसर पर केवल दो उदाहरण दूंगा।

एक तो जब चीन की सीमा से तुर्किस्तान के तातारी उठे

www.abulhasanalinadwi.org

तो ऐसा मालूम होता था। कि अब मानवीय वंश सब कुछ खोदेगा और अब कुछ भी बाक़ी न रहेगा। मालूम होता था कि अब दुनिया को अपना सांस्कृतिक सफ़र दोबारा शुरू करना पड़ेगा क्योंकि सब कुछ तहस नहस हो जायेगा। न पुस्तकालय रहेंगे, न स्कूल रहेंगे, न बुद्धिजीवी रहेंगे, न पढ़े लिखे लोग रहेंगे और हद यह थी कि वह उठे तो थे तुर्किस्तान से लेकिन योरोप में लोग उनसे डरते थे। यहां कुछ एतिहासिक गवाहियां प्रस्तुत की जाती हैं, जो योरोप के प्रमाणित और प्रसिद्ध इतिहासकार की पुस्तकों से ली गई हैं:

गिब्बन (Gibbon) अपनी प्रसिद्ध पुस्तक–

"THE DECLINE AND FALL OE THE ROMAN EMPIRE"

में लिखता है :—

"स्वीडन के वासियों ने रूस के माध्यम से जब तातारी तूफ़ान की ख़बर सुनी तो वह इतने भयभीत हो गये कि वह उनके डर से अपने नियमानुसार इंग्लिस्तान के समुद्री तटों पर शिकार खेलने नहीं निकले।"[1]

एच० जी० वेल्ज़ (H. G. WELLS) का कथन है कि :—

"यदि कोई राजनीतिक भविष्यवाणी करने वाला सातवीं सदी के प्रारम्भ में विश्व का परीक्षण करता तो इस परिणाम पर पहुंचता कि केवल कुछ शताब्दी की बात है कि पूरा

1. P, 16 vol. VII 3rd. Ed. LONDON 1909.

www.abulhasanalinadwi.org

योरोप और एशिया मंगोलों के प्रशासन में आ जायेगा।"[1]

हेराल्ड लैम्ब (HEROLD LAMB) लिखता है :–

"चंगेज़ खां के चारों ओर अत्याचार और लूटमार ने संस्कृति को ऐसी सख़्त हानि पहुंचाई कि आधी दुनिया में सभ्यता और शिष्टता को मर कर फिर से जन्म लेना पड़ा। ख़्वारिज़्म की हुकूमत, बग़दाद की ख़िलाफ़त, रूस का राज्य और कुछ दिनों के लिये पोलैण्ड (पोलार) की हुकूमतें मिट गईं।"[2]

लेकिन क्या हुआ ! कुछ सूफ़ियों (सन्त लोग), कुछ दिल और हिम्मत वाले लोग उठे, उन्होंने कोशिश की, अत्याचारियों से मिलें, उन्हें ख़ुदा की याद दिलाई, उसके प्रकोप से डराया, उनको इन्सान पर तरस खाने का उपदेश दिया और अपने सद्-व्यवहार से' अपनी आत्मीयता, अपने निस्वार्थता से तथा अपनी मानवीय सहानुभूति से उनके दिलों को मोह लिया। उनके दिलों को ऐसा नर्म बना लिया कि वह बिल्कुल मोम हो गये, जिसके इतने क़िस्से हैं कि बयान नहीं किये जा सकते। उन सूफ़ियों और अल्लाह वालों का धन दौलत से निस्वार्थ होने और उनके निस्वार्थता की हद यह है कि कुछ वृद्धजनों के अतिरिक्त उनमें से बहुधा के नाम भी इतिहास में नहीं मिलते। उन्होंने अपने नाम भी छुपाये। उन्होने पूरी तातारी नस्ल को आदमी बना दिया और ऐसा आदमी बनाया कि उनमें लेखक भी पैदा हुये, उनमें बड़े बड़े विधानज्ञ

---

1. A Short History of The world, LONDON. 1924 Page 140
2. Genghis Khan, LONDON, P.-286, LONDON, 1928.

www.abulhasanalinadwi.org

पैदा हुये, बड़ी–बड़ी हुकूमतों के प्रवर्तक पैदा हुये। उन्होंने मानवीय सभ्यता की रक्षा की और शताब्दियों तक दुनिया का पथ प्रदर्शन करने के योग्य रहे।

तो मेरे भाइयो ! किसी मुल्क पर, किसी वर्ग पर, और मुझे माफ़ कीजिये मैं साफ़ कहूंगा किसी समुदाय (Community) पर, किसी मकतबे ख़याल (School of thought) पर, किसी सोसाइटी पर किसी कन्ट्री और सिविलाइजेशन (civilization) पर यहां तक कि किसी आयु (Age) पर, पूरे–पूरे आयु (Age) पर इस दौरा का पड़ जाना, इसका बीमार हो जाना और पागलपन का शिकार हो जाना कोई अलग–अलग बात नहीं है, यह बार–बार हुआ है।

लेकिन असल डरने की बात यह है कि इस दौरे को दूर करने और आदमी को मानवता की सीमा में लाने और आदमी को आदमी बनाने और आदमी को अत्याचार से रक्तपात से डराने और आदमी की आदमी से दिल में मुहब्बत पैदा करने और अपने मुल्क की शुभ कामना और सच्ची देशभक्ति, सच्चा नेशनलिज़्म और अपने मुल्क की मुहब्बत पैदा करने की शिक्षा देने के लिये कोई पार्टी और कोई सम्प्रदाय खड़ा न हो, यह चीज़ डरने की है। एक आदमी जो इतिहास के फ़लसफ़े पर नज़र रखता है और जिसकी धर्मों के शैक्षणिक कार्य पर भी नज़र है। जिसने आसमानी किताबें पढ़ी है, जिसने आत्मिक व्यक्तियों की प्रवचनावली और मुख से निकले हुए शब्दों को पढ़ा है वह जानते हैं कि वह दौरे तो पड़ते रहते हैं। धन–पूजा का दौरा पड़ गया, आत्मिक इच्छाओं की

www.abulhasanalinadwi.org

उपासना का दौरा पड़ गया और आदमी से बेज़ार होने और आदमी की सूरत देखने का रवादार न होने और अत्याचार से आनन्द उठाने, Enjoy करने की बीमारी पैदा हो जाय । जिनको अति उचित मनोरंजन और प्राकृतिक स्वादों में वह मज़ा नहीं आता, किसी मनमोहक गीत और अच्छा नग़मा सुनने में मज़ा नहीं आता, जो उन्हें आदमी को मारने में मज़ा आता है। यहएक बीमारी है, यह मानवता की अन्तिम सीमा तक गिरावट है, और अन्तिम स्तर का अपमान है लेकिन मनुष्य इसका शिकार होता है और हुआ है और अगर कह दूं कि हज़ारों बार शिकार हुआ है तो ग़लत नहीं होगा। पूरे-पूरे इतिहास लिखे गये हैं, एक क़ौम के ज़ुल्म पर, एक साम्राज्य के दूसरे साम्राज्य को गुलाम बनाने पर और अत्याचार के कई-कई ढंग निकालने पर और इन्सानों को मार डालने और उन्हें जला देने की घटनाओं पर, मगर यह सब इतिहास का उपहार हो गया। इतिहास के सिवा ढूढ़े से नहीं मिलेगा साफ़ मालूम हो रहा था कि यह चीज़ दूर नहीं हो सकती। यह ख़ुदा का प्रकोप है, जिस क्षेत्र की चीज़ थी, उसकी जो सीमायें थीं। उसमें जो इन्सानी बिरादरी आबाद थी अब पनप नहीं सकेगी, यह सर उठा कर अब इज़्ज़त से चल नहीं सकेगी। उसके बच्चे पढ़ नहीं सकेंगे, उसकी औरतें इज़्ज़त के साथ रह नहीं सकेंगी।

लेकिन हवा का ऐसा रुख़ बदला और बहार का ऐसा झोंका आया, आत्मिकता का एक ऐसा झोंका आया और त्याग करने की ऐसी भावना पैदा हो हुई कि लोगों ने अपनी जानों की

www.abulhasanalinadwi.org

परवाह नहीं कीअपनी इज्जतों की परवाह नहीं की, ओहदे तो ओहदे क्या हैं अपने स्वास्थ्य अपने जीवन की परवाह नही की। भय का बादल छंट गया, वह कोहरा दूर हो गया, वह इन्सान जो बिल्कुल समझ खो बैठा था, पागल हो चुका था और उसके मुंह को ख़ून लग गया था, उसको खाने में वह मज़ा नहीं आता जो इन्सान का ख़ून बहाने में आता था। वह मानव और मानवता का रक्षक बन गया। जो लुटेरा और आक्रमणकारी था वह रक्षक और चौकीदार बन गया, जो क़ातिल था वह इलाज करने वाला और तीमारदारी करने वाला बन गया। एक ऐसा युग भी गूज़रता है कि लोग अपने बच्चों को देखकर खुश नहीं हो पाते हैं और आज भी कहीं–कहीं ऐसा हो रहा है कि लोग अपने बच्चों, पोतों और नवासों को देख कर खुश नहीं होते, बच्चे हंसते आते हैं कि उन्हें देखकर प्यार आ जाये मगर प्यार की जगह आंखों में आँसू आ जाते हैं कि कल नहीं मालूम इनका क्या परिणाम होगा, कब हिस्टीरिया का दौरा पड़ जाय और उन बच्चों को उनके माँ-बाप के सामने चीर फाड़ कर रख दिया जाय। हज़ार अफ़सोस और शर्म ऐसे जीवन पर कि आदमी अपने जिगर के टुकड़ों को, आँखों की ठंडक और दिल को आराम देने वालों को और हंसते मुस्कराते बच्चो को, नवासों, पोतों और पोतियों और पर्दों में रहने वाली औरतों को जिन पर किसी का साया नहीं पड़ा, जिन पर आज तक किसी की निगाह नहीं पड़ी, उनको देखकर यह खतरा अनुभव करे कि मालुम नहीं कब पागलपन का दौरा आये, दीवानगी का एक उबाल आये और उसके बाद न सुशील औरत रहे, न मासूम बच्चा रहे,

www.abulhasanalinadwi.org

न यतीम समझा जाये, न गरीब पर रहम किया जाये, न बेवा पर तरस खाया जाये, यह एक बीमारी है और मानवीय प्रकृति के बिल्कुल विपरीत है' ख़ुदा के पैदा करने के इरादे के विरुद्ध है और खुदा के पैगम्बरों, दूतों और रिफारमर्स के शैक्षणिक कार्य के विरुद्ध है लेकिन यह होता है और जो चीज़ होती है उसका ज़िक्र भी करना पड़ता है। दिल पर पत्थर रख कर वर्णन कीजिए आँखों पर पट्टी बाँधकर वर्णन कीजिए, रो कर कहिए, चीखें मार कर कहिये, कराहों के साथ कहिये, आहों के साथ कहिये लेकिन इसको कहना पड़ता हैं और कहना ही नहीं पड़ता लिखने पढ़ने वाला आदमी हूं लिखना भी पड़ता है। इतिहास में ऐसी घटनाओं का उल्लेख होता है और आने वाली नस्ल उन्हें देखती है और कहती है यह कौन लोग थे ? किस नस्ल के लोग थे ? किस इलाक़े के लोग थे ? उनको क्या हो गया था ? उनको यह पागलपन का दौरा कैसे पड़ा था ? उनकी मानवता कहाँ चली गयी थी ? और क्या दिल निकाल कर उन्होंने फेंक दिया था ? क्या आँखें उन्होंने फोड़ ली थीं ? क्या उनको किसी के दुःख से तकलीफ़ नहीं होती थी ? क्या इन्सान के बहते हुये ख़ून को देखकर उनके आँसू नहीं निकलते थे ? जहाँ ख़ून बहा है वहाँ कम से कम आँसू तो बहने चाहिये थे' आंसू बहने में क्या लगता है, आँसू बहने में क्या जाता है, लेकिन नहीं वह ऐसे कठोर थे कि इन्सान के जिस्म से ख़ून बहते हुये देखते रहे और उनकी आँख से एक आँसू नहीं टपका क्योंकि वह इंसान को जांचते थे धर्म से और केवल धर्म ही नहीं इन्सान को जाँचते थे। ऐतिहासिक वर्णनों से, इन्सान को जाँचते थे नाविलों और कहानियों से इन्सान को जाँचते थे जिस पर सैकड़ों वर्ष नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

हजारों वर्ष गुज़र गये लेकिन वह उनके निकट एक जीवित चीज़ थी और वह ख़ुदा जो सदैव जीवित रहने वाला और क़ायम रहने वाला है वह उनके निकट जीवित नहीं है। वह मानवता जो दुनिया में पनप रही है, फल फूल रही है फूल खिला रही है, सबसे बड़ा कारनामा बना रही है, किताबों के ढेर लगा रही है पुस्तकालय भर रही है और अब भी उसके अन्दर बुद्धि का खज़ाना है, अब भी उसके अन्दर प्रेम का ख़ज़ाना है, अब भी उस के अन्दर फूल का खिलाना है, यह इंसान जिससे दुनिया की बहार है, अगर इन्सान न हो तो दुनिया की क्या क़ीमत हो, इन्सान ही से उसकी बहार है, इन्सान ही से उसकी शोभा क़ायम है, इन्सान ही से उसकी चमक-दमक स्थिर है चले जाईये आप क़बरुस्तान में क्या आप का दिल वहाँ लगेगा चले जाईये अजायब घरों में क्या वहाँ रहने को दिल चाहेगा कैसे-कैसे जानवर हैं, कैसी-कैसी अत्युत्तम कृति और कारीगरी की चीज़े हैं लेकिन वहाँ आप ठहर नहीं सकते, देखेंगे और चले आयेंगे लेकिन इन्सान की बस्ती से इन्सान नहीं घबराता। जंगल से गुजरता है तो डरता है खुदा से दुआ करता हुआ कि ख़ैरियत से गुज़र जाये और इन्सानों के पास सुरक्षित पहुँच जाये। अगर इन्सान को इन्सान से मुहब्बत न हो इन्सान को इंसान के दुःख दर्द का अनुभव न हो, इन्सान-इन्सान पर तरस न खाये, इन्सान-इन्सान से सहानुभूति न करे तो वह इन्सान नहीं भेड़िया है। और कौन है जो भेड़िये की प्रशंसा करता है, और कौन है जो भेड़िये से घृणा नहीं करता है और कौन है जिसका भेड़िये की बुराई से दिल नहीं दुखता है। इतनी बड़ी भीड़ में है कोई व्यक्ति जो यह कहे कि आप भेड़िये की बुराई क्यों

www.abulhasanalinadwi.org

कर हैं कि जब इन्सान भेड़िया बन जाये तो आप का दिल नहीं दुखता, क्यों आप के दिल पर चोट नहीं पड़ती, उसके नाम से घृणा का प्रकटन क्यों नहीं होता क्या इन्सान भेड़िया बनने के लिये बनाया गया है ? इन्सान तो देवता बनने के लिये बनाया गया है, इन्सान तो संत बनने के लिये बनाया गया है, इन्सान तो खुदा की पैदा की हुई चीजों से सहानुभूति रखने के लिये बनाया गया है इन्सान को तो खुदा की बनायी हुयी चीज़ों में सबसे अधिक सज्जन होने का दर्जा दिया है और हमारी कविता, हमारा बोल-चाल, हमारे अनुभवों और हमारी मजलिसों में इसी ढंग से उसका वर्णन किया गया है और भेड़िया भेड़िया है, आज तक भेड़िया है सैकड़ों वर्ष से भेड़िया है और मैंने नहीं देखा कि किसी कवि ने भेड़िये की शान में प्रशंसा के गीत गाये हों और किसी अच्छे भले आदमी ने भेड़िये को अपना हीरो बनाया हो और अपना आईडियल समझा हो, साँप बिच्छू से तो हम घृणा करें, भेड़िये और तेंदुवे से तो हम घृणा करें, शेर और चीते से तो हम घृणा करें और वही काम जब हम करें तो हमें शर्म न आये ।

मैं कहता हूं कि एक इन्सान का एक इंसान पर हाथ उठता कैसे है इस हाथ को देखना चाहिये, उसको डाक्टरों के पास ले जाना चाहिये उनसे इसकी जाँच करानी चाहिये, इसको काटकर देखना चाहिये कि इसके अन्दर कौन सी चीज़ भरी हुयी है और किसका खून इसके अन्दर दौड़ रहा है । यह हाथ इंसान पर उठने के लिये नहीं बनाया गया था, यह हाथ बनाया गया था मानव जाति पर अत्याचार रोकने के लिये । इन्सान चाहे वह यूरोप का हो चाहे

www.abulhasanalinadwi.org

वह अफ्रीका का हो, चाहे वह अमरीका का हो, उस पर जहाँ भी अत्याचार हो हमारा हाथ उठना चाहिये और अत्याचार को रोकना चाहिये। अगर घर में है तो वहां भी रास्ता चल रहा है तो वहाँ भी, बाज़ार में है तो वहाँ भी। मौलाना हाली कहते हैं :—

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वर्ना ताअत के लिए कुछ कम न थे करोंबियाँ[1]

और हमारे रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया है कि दया करने वालों पर वह खुदा दया करता है जिसका नाम ही दयालु है। तुम ज़मीन के लोगों पर दया करो तुम पर खुदा दया करेगा जोआसमान में है। मौलाना हाली ने इसका एक शेर में बड़ा अच्छा अनुवाद किया है।

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर।
ख़ुदा मेहरबाँ होगा अर्शे बरीं पर॥

और यह रसूलल्लाह की कही हुई वह बात (हदीस) है जो आपस की बैठक में सबसे पहले सुनायी जाती है और शिक्षित लोग जानते हैं कि इस हदीस को कितना महत्तव दिया गया है।

वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुये निराश होने की आवश्यकता नहीं, लेकिन इस समय सबसे अधिक आवश्यकता इसकी है कि हमारे धार्मिक पेशवा और हमारे राजनीतिक लीडर निकल आयें और हाथ पकड़—पकड़ कर कहें कि इस देश की मान मर्यादा रख लो, इस देश की आन पर बट्टा न लगाओ, आदमी

1. ऊँचे दर्जे के फ़रिश्ते (देवता)

www.abulhasanalinadwi.org

बन कर रहो, एक दूसरे से मोहब्बत करो। जीवन का सारा मज़ा इसमें है कि आदमी आदमी को देखे, आदमी आदमी को देखे आदमी आदमी को पहचाने और आशा रक्खे कि अगर हम पर कोई आफ़त पड़ेगी हम पर कोई मुसीबत आयेगी, तो यह बचायेंगे इसी का नाम जीवन है इसी का नाम संस्कृति है और इसी का नाम देशप्रियता है, और इसी का नाम राजनीति भी है, सही राजनीति भी यही है कि मुल्क में सब मिल जुल कर रहें।

बस सज्जनों! मैं यह कहता हूं कि हमारे देश पर इस समय पागलपन का दौरा पड़ा है। दीवानगी का जो दौरा पड़ा है, मनोभावना का जो दौरा पड़ा है, धार्मिक राजनीतिक ढंग से प्राप्त करने (Exploitation) का जो दौरा पड़ा है यह दौरा है, और दौरा अस्थायी होता है यह दौरा चला जायेगा मगर इसके दूर करने के लिये इलाज करने वालों की आवश्यकता है, सहानुभूति करने वालों की आवश्यकता है, दिल रखने वालों की आवश्यकता है जो अपने घरों से घबरा कर निकल आयें और इसका भी ख़्याल न करें कि हम क्या खायेंगे क्या पीयेंगे और दीवाने बन कर इस मुल्क में फिरें, जत्थे बना-बना कर दौरे करें जनसाधारण को जमा करें और देश के नाम पर, मानवता के नाम पर, बुद्धि और न्याय के नाम पर, और खुदा के डर और उसकी पहचान के नाम पर, उनसे अपील करें कि अब इसे समाप्त करो, अब ठण्डे हो जाओ, और अब जो रचनात्मक कार्य हैं, उन्नति के कार्य हैं, देश के बनाने वाले कार्य हैं, देश का नाम रोशन करने वाले कार्य हैं, और देश की इज़्ज़त बढ़ाने वाले कार्य हैं,

www.abulhasanalinadwi.org

वह काम करो, यह देश बहुत बदनाम हो चुका है। आप को शायद मालूम नही लेकिन मैं आप से कहता हूं, मुझे याद नहीं और इतिहास के अन्दर रेकार्ड मौजूद है कि इस देश पर कभी ऐसा धब्बा नहीं आया था और यह मुल्क बाहर की दुनिया में कभी इस नज़र से देखा नहीं गया था जैसा कि आजकल देखा जा रहा है। इसमें हम सब शरीक हैं, हिन्दू मुसलमान सब शरीक हैं, इस लिए कि हम भी हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तानी रहेंगे (अगर खुदा ने चाहा तो)। हिन्दुस्तान हमें बहुत प्यारा है, यहाँ की जलवायु हमें बहुत प्यारी है, यहाँ की सभ्यता हमें प्यारी है, यहाँ का इतिहास हमें प्यारा है यहाँ का सिविलाईज़ेशन हमें प्यारा है और मुसलमानों ने इस देश को छोड़ा नहीं, वह कहीं भी जा सकते थे उनके लिए बहुत सी जगहें थीं लेकिन उनसे अपना देश छोड़ा नहीं गया और न छोड़ा जायेगा, मगर इसके लिए साहस से काम लें, हौसले से काम लें, पावर से काम लें, संगठन से काम लें, प्रशासन अपना कर्तव्य निभाये स्कूल और कालेजेस अपने कर्तव्यों का पालन करें, पुलिस अपना फ़र्ज़ पूरा करे, प्रेस अपना कर्तव्य निभाने में पीछे न हटे।

मुल्क की तीन चूलें अगर बैठ जायें तो क्या मुल्क बाक़ी रह जायेगा और वह तीन चूले हैं—एजूकेशन, पुलिस और प्रेस। यह तीनों चीज़ें ऐसी हैं कि अगर यह ठीक हो जायें तो फिर कोई बड़ा ख़तरा नहीं है। आदमी पढ़ लिख कर निकले तो रोशनी का सबक़ पढ़ कर निकले, मानव जाति की मान मर्यादा का सबक़ पढ़ कर निकले और उसके बाद पुलिस जिसमें सेवा की भावना हो

www.abulhasanalinadwi.org

एक दूसरे की मदद करने की भावना हो, मैं आप से साफ कहता हूं, मुझे नहीं मालूम कि यहाँ पुलिस का कितना मार्गदर्शन है लेकिन मैं एक सच्चाई बयान करता हूं, मैं कितने मुल्कों में गया हूं, वहाँ पुलिस को देखकर इत्मीनान होता है वहाँ पुलिस को पथप्रदर्शक और सहायक समझा जाता है। मुझे ख़ुद इत्तिफ़ाक़ हुआ है कि एक कांस्टेबिल से पता पूछ लिया तो पूछ कर पछताया केवल इतना ही नहीं कि उसने पता बतलाया बल्कि साथ साथ चला, पुलिस वहाँ है ही इस काम के लिए कि अत्याचार न होने दे और कमज़ोर की मदद करें और यही नहीं बल्कि मार्गदर्शन करे।

अंग्रेजों ने अपना प्रभुत्व क़ायम करने के लिए (कि वह समुद्र पार से आये थे) उन्होंने पुलिस एजेन्सी बनाई थी कि वह उसके माध्यम से अपना प्रभुत्व स्थापित करे। अंग्रेजों को पुलिस द्वारा लोगों को प्रभावित करना था। अब आजकल इसकी क्या आवश्यकता है ? आजकल तो यह होना चाहिए कि आदमी पुलिस को देख कर ख़ुदा का शुक्र अदा करे कि मैं ख़तरे में पड़ गया था, मुहल्ला ख़तरे में पड़ गया था, औरतें ख़तरे में पड़ गयी थीं, बच्चों की जानें जाने का ख़तरा था. यह पुलिस वाले ही थे जिन्होंने बचाया ऐसा होना चाहिए था। यह एहसास आम होना चाहिए था। मैं कहता हूं शिक्षा, पुलिस और प्रेस तीनों ही चीज़ें अगर अपना कर्तव्य भलीभांति निभायें तो इस देश में इस तरह की घटनाएं फिर नहीं हो सकतीं जिस तरह कि हुई हैं। इसके बाद मैं कहता हूं कि दौरा पड़ने से न घबराइये, बीमारी फैलने से न घबराइये, इन्सान हैं तो ज़िन्दगी में सब कुछ होगा। यह ऊंच नीच

www.abulhasanalinadwi.org

है ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव हैं जीवन का, लेकिन डरने की बात यह है कि इस दौरा का इलाज करने के लिए, इस बीमारी का डर ख़त्म करने के लिए, इस मरीज़ को बचाने के लिए कोई संगठन न हो, कोई संस्था न हो, कोई पार्टी न हो और देश भक्त न हो, मानवता के प्रेमी और न्याय प्रिय लोग न हों। किसी भी देश के लिए चाहे उसकी ज़मीन ख़जाना उगले उसका आसमान सोना बरसाये और उसके दरिया सोने और चाँदी के बन जायें और उस देश में वे कमाये और बिना परिश्रम के सब को रोज़ी मिले, परन्तु अगर संतुष्टि नहीं, आपसी संबन्ध ठीक नहीं, एक दूसरे पर विश्वास और भरोसा नहीं।

यह क्या बात है कि हम आदमी को देख कर घबरायें, घबराने की चीज़ भेड़िया है, घबराने की चीज़ तेंदुआ है, घबराने की चीज साँप और बिच्छू है, घबराने की चीज़ आदमी नहीं है। क्या यह आदमी इसलिए पैदा हुआ था कि आदमी, आदमी को मारे, आदमी के लिए और शंकायें और ख़तरे क्या कम थे ?

मैं कह रहा था कि इन तातारियों को जिसने आदमी बनाया, क़ानून का सम्मान दिया, सभ्यता का रक्षक बनाया वो अल्लाह वाले लोग थे, वो दिलवाले लोग थे, वो आत्मिक लोग थे, भारत वर्ष का आज़ाद कराना आसान न था, आप देखिये अंग्रेजों का साम्राज्य ब्रिटिश इम्पायर कहाँ तक था हमने बचपन में यह कहावत सुनी कि 'अंग्रेजों के साम्राज्य में सूरज नहीं डूबता", कहीं निकलोगे कोई न कोई कोना ऐसा मिल जायेगा जहाँ सूरज प्रकाशित होगा। यहाँ से लेकर अदन तक उनकी हुकूमत थी और यह एक

www.abulhasanalinadwi.org

ख़्वाब था कि कभी यह मुल्क आज़ाद होगा, लेकिन देश प्रिय हिन्दुओं और मुसलमानों ने गाँधी जी के साथ मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के साथ, मौलाना मुहम्मद अली और मौलाना शौकत अली के साथ, मौलाना अब्दुल बारी फ़िरंगी महली के साथ और शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूद हसन के साथ और उनके बाद मौलाना हुसैन अहमद मदनी और नेहरू ख़ानदान के साथ यह नारा दिया कि अंग्रेजों का बाईकाट करो। गाँधी जी और मौलाना आज़ाद सबसे आगे आगे थे और उस समय हिन्दू और मुसलमान अपने कल्चर तथा भाषा में भिन्नता होते हुये भी एक दूसरे से इस प्रकार मिले और जुड़े थे जिस तरह घी और शकर, और दूध और पानी मिला होता है। मेरा प्रारम्भ का ज़माना था मैंने अमीनाबाद पार्क में गाँधी जी की तक़रीर सुनी है मैंने मोतीलाल नेहरू को देखा है। मौलाना आज़ाद से हमारे पुराने सम्बन्ध थे, इन लोगों ने मिल कर अनहोनी बात होनी कर दी कि हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ। उस समय कोई कहता तो उससे कहा जाता कि मियाँ अपने दिमाग़ का इलाज कराओ, नार्मल हालत में हो, अंग्रेजों को कोई निकाल सकता है? लेकिन यह हिन्दू-मुस्लिम एकता थी, यह देश प्रेम और देश भक्ति थी जिसने अंग्रजों को भारत छोड़ने पर विवश कर दिया।

इसके बाद तीन चीजें थीं, गाँधी जी ने और उनके साथियों ने और मौलाना आज़ाद ने (मौलाना आज़ाद सबसे प्रत्यक्ष और सबसे आगे हैं) तीन चीज़ों को प्रस्तुत किया था कि यह तीन शर्तें हैं जब तक यह रहेंगी हिन्दुस्तान आज़ाद रहेगा शान्ति और सुरक्षा रहेगी, ख़ुशहाली रहेगी और प्रेम का वातावरण रहेगा एक सेक्यू-

www.abulhasanalinadwi.org

लारिज्म (Secularism) डिमोक्रेसी (Democracy) और नान-वायलेन्स (Non–Violence) यह तीन चीज़ें हैं जो आवश्यक हैं देश के अस्तित्व के लिए, यह रहेंगी मुल्क रहेगा। स्कालर्स भी सुन लें, हिस्टोरियन भी सुन ले और सब सुन लें और दिल की तख़्ती पर सुरक्षित कर लें, कुछ भी हो जाये यह देश इन तीन चीज़ों के बिना नहीं रह सकता। आज मैं फिर कहता हूं कि यह देश तीन चीज़ों पर आधारित रह सकता है, एक यह कि डिमोक्रेट स्टेट हो, नान-वायलेन्ट हो और सेक्यूलर हो, इस लिए कि भाग्य विधाता ने यह निर्णय कर दिया (और ख़ुदा का निर्णय कोई बदल नहीं सकता) कि इस देश में हिन्दू भी रहेंगे और मुसलमान भी, जैनी भी रहेंगे और बौद्ध भी, सिख भी रहेंगे और ईसाई भी। अगर ऐसा न होता तो ख़ुदा क्यों बाहर से भेजता, क्यों यह आसानी पैदा होती। यह मुल्क इसी तरह रह सकता है कि सेक्युलर हो। अरब कवि कहता है कि, "जब आग को कुछ और खाने को नहीं मिलता तो वह अपने आप को खाने लगती है।" यह इस्लाम से पहले की कविता में है कि आग अपने को खाने लगती है अगर उसे कुछ खाने को न मिले। मैं आपसे साफ कहता हूं कि आज अगर आप ने मुसलमानों से, ख़ुदा न करे, किस मुँह से कहूं मगर कहना पड़ता है, फ़ुर्सत कर ली----, आपने मुसलमानों के प्रिय और पावन जगहों को अपने कब्जे में ले लिया तो याद रखिये फिर यह मतभेद आपके अन्दर चलेगा। यह बैकवर्ड क्लासेज़ हैं, जैनी हैं बुद्धिस्ट है, खड़े हो जायेंगे और कहेंगे कि हमारे पूजा स्थलों को वापस करो। आठवीं सदी ईसवी में साउथ में शंकराचार्य पैदा हुये थे। उन्होंने तमाम बौद्ध पूजा स्थलों को

www.abulhasanalinadwi.org

हिन्दू मन्दिरों में परिवर्तित कर दिया था। मैंने वहाँ जाकर देखा है, मैंने नालन्दा की बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी देखी है जो खुदाई में निकली है और जगह-जगह मैंने देखा है कि जैनियों के हज़ारों मन्दिर परिवर्तित हो गये, बुद्धों के सैकड़ों हज़ारों मन्दिर हिन्दुओं के कब्जे में चले गये। राजीव जी से लेकर जो प्राइमिनिस्टर आया मैंने उसको ख़त लिखा मेरे वह ख़त छपे हुए हैं। मैंने लिखा कि इतिहास को उल्टा सफ़र न कराइये, तारीख़ को उल्टा सफर कराना बड़ी भूल है। इतिहास को आगे बढ़ाइये, फ़ुर्सत कहाँ है इतनी, कितने दिन की ज़िन्दगी है कितने हमारे साधन और स्रोत हैं और कितने अवसर और सम्भावनायें हैं, और दुनिया में कैसी-कैसी घटनायें घटित हो रही हैं और कितने लोग हैं जिनकी आयु सौ से अधिक होती है, फिर क्यो समय नष्ट किया जा रहा है, क्यों इतिहास को उल्टा सफर कराया जा रहा है, क्यों अपनी शक्ति अपने सदाचार और अपनी योग्यता को बरबाद किया जा रहा है। इतिहास को आगे बढ़ाईये देश को आगे ले जाइये। यह कैसा दौरा है कि मुल्क को पीछे ले जाने की चेष्टा की जा रही है। अगर यह होता रहा कि पहले यह था, वह था, फिर तो फ़ुर्सत नहीं मिलेगी और फिर ऐसी ख़राबियाँ पैदा होगी कि जीने का मज़ा न रहेगा, हिन्दुस्तान का नाम डूब जायेगा। इसके नाम पर ख़ाक पड़ जायेगी और यहाँ जो हीरोज़, थिंकर्स और फ़िलास्फर पैदा हुये हैं वह सब छुप जायेंगे और सामने केवल यह रहेगा कि यह वह भारतवर्ष है जहाँ आदमी जलाया जाता है, जहाँ आदमी को टुकड़े-टुकड़े किया जाता है, जहाँ आदमी को आरा मशीन में लकड़ी की तरह चीर दिया जाता है और जहां मासूम बच्चों को

www.abulhasanalinadwi.org

चलती ट्रेनों से उठाकर बाहर फेंक दिया जाता है।

यह बातें ख़ुदा को पसन्द नहीं। आप सितारों तक पहुंच जायें, चाँद तक पहुंच जायें लेकिन एक इण्डियन फिलास्फर ने कहा था सी. एम. जोड, (C. M. Joad) ने लिखा है, वह लन्दन में फिलास्फिक डिपार्टमेन्ट का हेड था, उसने लिखा है और यह बात हिन्दुस्तानियों के लिये गर्व की है उसने लिखा है कि एक इण्डियन फ़िलास्फ़र आये, शायद राधाकृष्णन् थे वह आये, हमारे यहाँ के एक बड़े प्रवीण और बोलने वाले ने कहा आप को खबर है हम कहाँ से कहाँ पहुंच गये, हम चाँद पर पहुंच गये, हमने यह दूरी इतने घण्टों में पूरी कर ली, हम एक देश के फ़लां किनारे से दूसरे देश के किनारे तक हवाई ज़हाज़ से पहुंच गये। पहले वह सुनते रहे, फिर सब सुनने के बाद उन्होंने कहा कि हाँ पानी पर तुम मछलियों की तरह तैरने लगे और हवा में चिड़ियों की तरह उड़ने लगे मगर पृथ्वी पर आदमियों की तरह चलना नहीं आया। डाक्टर ज़ाकिर हुसैन खाँ साहब ने इस बात को कोट किया है जामिया की सिल्वर जुबली की बैठक में। मैं भी वहाँ मौजूद था। जो बच्चा दुनिया में आता है वह इस बात का प्रमाण लाता है कि ख़ुदा इन्सान से निराश नहीं है वरना इस बच्चे को दुनिया में न भेजता, मगर हमारा कार्य बताता है (उस ज़माने में पागलपन की ऐसी घटनायें हो रही थीं) कि हम इन्सानों से निराश हैं, ख़ुदा निराश नहीं। अगर वह निराश होता तो बच्चे को इस दुनिया में न भेजता। आप इन्सान को परख कर देखिये कि वह है क्या चीज़? उसको खुदा ने वह दिल दिया है जो अपने प्राणी वर्ग में किसी को नहीं दिया। मैं यह कह दूं कि यह दिल फ़रिश्तों को भी नहीं दिया

www.abulhasanalinadwi.org

गया, खुदा ने जो दिल, इन्सान के दर्द में जलने वाला, पिघलने वाला, तड़पने वाला, आँखों से आँसू बहाने वाला, ख़ुदा से माँगने वाला और उसके सामने गिड़गिड़ाने वाला, इन्सान को दिया है, वह किसको दिया है ? यह इन्सान तो इस योग्य था कि उसको आँखों में बिठाया जाये, सर पर जगह दी जाये, अपने घर में उसको रक्खा जाये कि हमारा भाई है, लेकिन उसी इन्सान पर हाथ उठता है, उसी इन्सान को रौंदा जाता है, कमज़ोर औरतों और मासूम बच्चों को अत्याचार का निशाना बनाया जाता है। बम्बई, अहमदाबाद और मुख्यता सूरत में आप देखिये कि क्या हुआ, रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं आप से साफ़ कहता हूं मुझे बहुत जगह जाना होता है, मेरे दोस्त और साथी हर जगह हैं, कह नहीं सकता वहाँ जो हुआ।

यह किसी तरह से न धर्म को शोभा देता है और न मानवता को, न ज्ञान को और न बुद्धि को, न सज्जनता को और न हिन्दुस्तानियत को। आपको पता नहीं कि हिन्दुस्तान को बाहर दुनिया में किस दृष्टि से देखा जाता था और इसको क्या स्थान मिला हुआ था। यहाँ अल्लाह के ऐसे ऐसे बन्दे पैदा हुए कि अगर बताने पर आऊँ तो शाम हो जाये लेकिन आप का अधिक समय नहीं लूंगा। अन्त में फिर यह कहता हूं, पते की बात है, नोट करने की बात है कि बीमारी डरने की चीज़ नही है, बीमारी का इलाज करने वालों का न होना डरने की चीज़ है। बीमार की बीमारी देख कर तड़पने वालों की कमी, बीमार की बीमारी देखकर इलाज की भावना रखने वालों की कमी, यह

www.abulhasanalinadwi.org

बात हर मुल्क, हर सोसाईटी, हर सभ्यता और हर युग के लिए ख़तरनाक है और यह दुनिया जो अब तक बाक़ी है यह उन्हीं इलाज करने वालों के कारण बाक़ी है । पहले तो पैगम्बरों की विभूति से फिर, सूफ़ियों और दिल वालों, सहानुभूति रखने वालों और मानवीय मित्रों की विभूति से क़ायम है । जिन्होंने अपना आराम छोड़ा, खाना पीना भूल गये, घर वालों को भूल गये और इन्सानों को दुःख से बचाने के लिए और इन्सानों को इन्सानों के ख़न्जर से सुरक्षित रखने के लिए और मानव जाति से शत्रुता का इलाज करने के लिए घरों से बाहर आ गये । भूखे रहे, जाग कर रातें गुज़ारीं, जान को ख़तरे में डाला और दीवानावार निकल पड़े, आज इस देश को इसी की आवश्यकता है ।

हम आशा करते हैं कि हमारे यह सम्मानित भाई जो यहाँ स्टेज पर बैठे हुये हैं और बहुत से सम्मानित भाई जिनको स्टेज पर जगह नहीं मिली यह लोग साहस करके और दूसरे पोलिटिकल लीडर और धार्मिक पेशवा बाहर निकलें और इस वर्तमान परिस्थिति को समाप्त करने की चेष्टा करें कि अब यह फिर से ना होने पाये । कुछ भी हो जाये यह न होने पाये ।

ख़ुदा इससे ख़ुश होता है कि आप उसका नाम लें आप उसके बन्दों की सेवा करें इन्सानों के ही लिए उसने सब चीज़ें बनायी है यहाँ तक कि मस्जिद और मन्दिर भी इन्सानों के लिए ही हैं क्योंकि वहाँ जाकर जानवर तो ख़ुदा की पूजा नहीं करते । मैंने आपका बहुत समय लिया लेकिन फिर मैं वह शेर पढ़ूंगा अमीर मीनाई का कि—

www.abulhasanalinadwi.org

अमीर जमा है अहबाब दर्दे दिल कह ले ।
फिर इल्तिफ़ाते दिले दोस्तां रहे न रहे ।।

न जीवन का भरोसा, न हमारे आप के एकत्र होने का संतोष, न इस संतुलित जीवन का विश्वास कि आप इस संख्या में एकत्र हों जिस संख्या में आज एकत्र हुए, शायद किसी के दिल को लग जाये और कोई खड़ा हो जाये, फिर उसके साथ और लोग भी चलेंगे और देश की वर्तमान स्थिति, जो लज्जापूर्ण भी है और दुःखदायी भी, बदलेगी । अल्लाह हमें सामर्थ्य दे—खुदा करे ऐसा ही हो ।

www.abulhasanalinadwi.org